यंत्रणागृह

● अर्न्स्ट टोलर

स्टटगार्ड के खुफ़िया पुलिस के अफ़सर ने उस मरते हुए नौजवान से पूछा–क्या तुम्हारी कोई आख़िरी इच्छा है जिसे इस आख़िरी वक़्त पूरा करना चाहो?

नौजवान सूनी आँखों से उन बन्द खिड़कियों को एकटक देखता रहा जो आसमान को नीले चौकोर टुकड़ों में काट देती थीं। आँगन में शाहबलूत का पेड़ अपने कँटीले फलों से लदा खड़ा था। उसने अपने से कहा–देखो वहाँ कैसे मीठे शाहबलूत लगे हैं, वह तुम्हारे खाने के लिए हैं; और जब वे पक चुकते हैं तो मुँह में आप आ गिरते हैं। मैं उन्हें भरपेट खा सकता था–मैंने अपने को क्यों पकड़ा जाने दिया?

'कुछ समझे मैं तुमसे क्या कह रहा हूँ?' अफ़सर ने दोहराया, 'क्या तुम्हारी कोई अंतिम इच्छा है?'

नौजवान ने अपने से कहा–हाँ एक चीज़ है जो मैं चाहता था, या दूसरी तरह कहो तो नहीं चाहता था। मैं नहीं चाहता था कि फिर से कैद हो जाऊँ, मैं नहीं चाहता था कि तुम मुझे मारो, ठोकरें बरसाओ और मेरे मुँह पर थूको। अगर मेरे पास ऐसी कोई इच्छा होती तो क्या मैं खिड़की से कूद गया होता? मैं समझता हूँ कि तुम्हारा यह ख़याल है कि मैंने यह सब महज़ मज़ाक के लिए किया है। है न?

'शायद तुम अपनी माँ को देखना चाहो, मौत के पहले?'

मौत, हाँ, यही तो कहते हैं उस काली चीज़ को। लेकिन वह अगर उसका नाम न लेता तो क्या कुछ बिगड़ जाता? मुझे अब यह बतलाने की ज़रूरत नहीं कि मुझे मरना है: और उस चीज़ का नाम लेना मेरे मुँह पर लेना बहुत बेहूदा बात है।...मगर वह मरेगा नहीं, वह तो घर जाएगा।

'हाँ मैं अपनी माँ को देखना चाहूँगा।' कितना अच्छा आदमी है कि उसे इस बात का ख़याल है; उसकी नीयत यही है शायद...

उसने भावशून्य आँखों से अफ़सर को देखा और सिर हिलाकर अपनी मौन स्वीकृति दी।

'मैंने उन्हें बुलाने के लिए आदमी दौड़ा दिया है, थोड़ी देर में आ जाएँगी वह।...अरे हाँ, एक सवाल है जिसका अब तक हमें कोई जवाब नहीं मिला : वह कौन था जिसने तुम्हें वे पत्र दिये?'

अफ़सर ने इन्तज़ार किया।

बहुत खूब, नौजवान ने सोचा। उस सवाल से उसके मुँह का स्वाद न जाने कैसा हो गया। उसे भयानक ऊब और खीझ महसूस हुई।

एक बार उन्होंने उसके मुँह में इसलिए कपड़ा ठूँस दिया था कि वह चिल्ला न सके और आज वे चाहते हैं कि वह चिल्लाए और अपने उन साथियों का नाम उगल दे जिनके पीछे वे हफ्तों से कुत्तों की तरह लगे थे। कितनी घिनौनी बात है। कितनी घिनौनी।

'मैं आपको कुछ नहीं बतला सकता।'

'अपनी माँ का ख़याल करो।'

नौजवान ने छत की ओर देखा।

वह और चार घण्टे ज़िन्दा रहा। चार घण्टे में तो बहुत से सवाल किये जा सकते हैं। अगर तीन मिनट में एक पूछा जाय तो भी हुए अस्सी। अफ़सर अफ़सरी में कुशल था, अपना काम समझता था, इसके पहले वह बहुतों से सवाल कर चुका था। मरते हुए लोगों से भी। तुम्हें जानना चाहिए काम करने का ढंग, और बस। किसी से गला फाड़कर चिल्लाओ और किसी से धीमे, कान में बात करो, कुछ को सब्ज़बाग़ दिखाओ।

अफ़सर ने कहा–'यह तुम्हारे भले के लिए है।'

लेकिन नौजवान ने फिर कोई सवाल न सुना। न धीमे, न ज़ोर से। वह शान्ति के साथ इस दुनिया से विदा ले चुका था।

दूसरे दिन अखबार में यह विज्ञप्ति छपी:

'जैसे कि खुफ़िया पुलिस के अफ़सर स्टटगार्ड के एक मज़दूर को इस अभियोग में पकड़ने वाले थे कि वह मज़दूरों को भड़काने वाले पर्चे बाँटता था, वैसे ही वह अपने मकान की तीसरी मंज़िल की खिड़की से नीचे आ रहा था। उसे आँगन में पड़ा पाया गया। उसकी रीढ़ की हड्डी चूर-चूर हो गई थी।

'कुछ दिन बाद वह जनरल अस्पताल की हवालाती कोठरी में मर गया।'

(अर्न्स्ट टोलर हिटलर काल के जर्मन लेखक थे)

आह्वान यहां से प्राप्त करें

उत्तर प्रदेश ■ जनचेतना, जाफरा बाजार, गोरखपुर ■ जनचेतना, 16/6, वाद्यम्बरी हाउसिंग स्कीम, अल्लापुर, **इलाहाबाद** ■ विजय इन्फार्मेशन सेण्टर, कचहरी बस स्टेशन, **गोरखपुर** ■ जनचेतना, डी-68, निरालानगर, **लखनऊ** ■ जनचेतना स्टाल, कॉफी हाउस के पास, हजरतगंज, **लखनऊ** (शाम 5 से 8.30 तक) ■ प्रोग्रेसिव बुक सेण्टर, विश्वनाथ मन्दिर गेट, बी.एच.यू. परिसर, **वाराणसी** ■ जनचेतना ठेला, चौड़ा मोड, **नोएडा** (शाम 5 से 8) ■ शहीद पुस्तकालय, द्वारा डा. दूधनाथ, जनगण होम्यो सेवासदन, मर्यादपुर, **मऊ**

दिल्ली ■ अभिनव सिन्हा, बी-100, मुकुन्द विहार, करावल नगर, दिल्ली ■ सत्यम, सी-74, दिव्यज्योति अपार्टमेंट, सेक्टर-19, रोहिणी ■ गीता बुक सेंटर, जे.एन.यू. ■ बुक कार्नर, श्रीराम सेंटर, **मंडी हाउस**

बिहार ■ पीपुल्स बुक हाउस, पटना कालेज के सामने, **पटना** ■ रामनारायण राय, द्वारा राघव पटेल कपड़े की दुकान, साहेबगंज, पोस्ट करनौल, जिला-**मुजफ्फरपुर**

बंगाल ■ बुक मार्क, 6, बंकिम चटर्जी स्ट्रीट, **कलकत्ता** ■ जनार्दन थापा, लुकसान बाजार, पो. करेन, जि. **जलपाईगुड़ी** ■ राकेश गोरखा, सरस्वती पुस्तक मन्दिर, प्रधाननगर, **सिलीगुड़ी**

मध्य प्रदेश ■ चिंचोलकर बुक हाउस, बस स्टैण्ड, जगदलपुर, **बस्तर**

महाराष्ट्र ■ पीपुल्स बुक हाउस, 15, कावसजी पटेल स्ट्रीट, फोर्ट, **मुम्बई**

पंजाब ■ सुखविन्दर, 154, ओम बेकरी के सामने, शहीद करनैल सिंह नगर, फेज़-3, पखोवाल रोड, **लुधियाना**